सामाजिक बहिश्करण

सामाजिक बहिश्करण क्या है?

सामाजिक बहिष्करण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा वि"िष्ट समूहों को व्यस्थित ढंग से वंचित रखा जाता है क्योंकि उनके साथ नस्लता, जाति, धर्म, यौनिक परिचय, जाति, व"ा, जेंडर, आयु, विक्लांगता, एच. आई.वी. स्थिति, प्रवास सिति अथवा वे कहां रहते हैं, इस आधार पर भेदभाव किया जाता है। भेदभाव सार्वजनिक संस्थानों, जैसे कानूनी व्यवस्था अथवा ि"ाक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं, तथा घर जैसी सामाजिक संस्थाओं में होता है।

सामाजिक बहिष्करण के बारे में अलग–अलग विचारधाराएं हैं और वे इस प्रक्रिया के विभिन्न पक्षों पर जोर देते हैं:

पहचानः कौन से समूह हैं जिन्हें बहिष्कृत किया गया है?

- मुद्देः कौन–कौन से मुद्दे हैं जिनसे लोगों को अलग–थलग रखा गया है (जैसे रोजगार, ि"ाक्षा, नागरिकता, सम्मान)
- प्रभावः सामाजिक बहिकरण के प्रभाव से जुड़ी समस्याएं, (जैसे निम्न आय, खराब आवास, कर्जदारी)
- प्रक्रियाएंः वे कारक जो बहिष्करण को बढ़ावा देते हैं, और
- सामाजिक बहिष्करण की प्रक्रिया में शामिल एजेंट और अभिनेता (एक्टर्स)

सामाजिक बहिष्करण की विशष्टिताएंः

- सामाजिक बहिष्करण बहुआयामी होता हैः इसमें सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक आयाम शामिल हैं, और यह विभिन्न स्तरों पर काम करता है। सामाजिक बहिष्काण का अनुभव सामाजिक–आर्थिक और नस्लीय समूहों में असमान रूप से दिखाई देता है। उदाहरण के लिए, अधिकां"ा महिलाएं जेंडर भेदभाव का सामना करती हैं लेकिन दलित महिला और गरीब महिलाओं द्वारा झेले जाने वाला भेदभाव अलग होता है।

सामाजिक बहिश्करण अन्तःक्षेत्रीय होता हैः सामाजिक बहिष्करण, बहिष्कार के विभिन्न पक्षों में अन्तनिर्हित रूप से जुड़ा होता है। सामाजिक बहिष्करण के समझने योग्य महत्वपूर्ण अन्तः जुड़ाव हैंः आप कौन हैं(पहचान), आपके पास क्या है (संसाधन) और आप कहां हैं(भौगोलिक स्थिति)। अन्तःक्षेत्रीयता का अर्थ यह भी है कि यह अकेली ही काम नहीं करती, बल्कि यह अन्य कारणों के साथ मिलकर काम करती है। अन्तःक्षेत्रीयता जाति, जेंडर, धर्म, शारीरिक अथवा मानसिक विक्लांगता, नस्लता आदि में घटित होती है। उदाहरण के लिए, किसी दलित महिला, जो विक्लांग भी हो सकती है, के द्वारा अनुभव किया गया भेदभाव, समाज की पितृसत्तात्मक प्रकृति और शारीरिक रूप से सक्षम लोगों की कद्र करने वाले और अक्षम लोगों को महत्वहीन मानने वाले जातिगत सत्तानुक्रम के कारण हो सकता है। इस तरह, यह भौगोलिक स्थितियों पर आधारित हो सकता है (जैसे, बहुत दूर–दराज वाले इलाके, आदिवासी क्षेत्र), विविध पहचानें जैसे सांस्कृतिक, यौनिक, सामाजिक पहचानें(जैसे यौनिक अल्पसंख्यक समुदाय, दलित, ग्रामीण लोक, विक्लांग लोग, एच.आई.वी./एड्स ग्रस्त लोग) और संसाधन आधारित (सामान्य भाषा में गरीब)

संसाधनों तक असमान पहुंचः इसकी वजह से भारी मात्रा में समेकन/बहिष्करण होता है, जिसे संसाधनों, क्षमताएं और अधिकारों तक असमान पहुंच जिसकी वजह स स्वास्थ्य असमानताएं बढ़ती हैं। सामाजिक भेदभाव एक सार्वभौमिक घटना है, जो पूरे क्षेत्रों में विभिन्न लोगों के बीच अलग–अलग रूपों में दिखाई पड़ती है। जाति, यद्यपि, भारतीय उप–महाद्वीप में सामाजिक भेदभाव का अद्वितीय निर्धारक है। अलग–अलग क्षेत्रों में दलितों आर और विभिन्न अधिकारियों के द्वारा विभिन्न प्रकार के भेदभावों का सामना किया जाता है तथा स्वास्थ्य एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें जाति–आधारित भेदभाव होता ही है। समाज में सामाजिक बहिष्करण का क्या परिणाम होता है?

प्रभावित व्यक्तियों अथवा समुदायों अथवा समूहा को अपने समाज के पूरी तरह से सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन में भाग लेने से रोका जाता है।

1. सामाजिक रूप से बहिष्कृत व्यक्तियों अथवा समुदायों को सामाजिक भागीदारी, सामाजिक एकीकरण, तथा दरकिनार करने वाली, भेदभाव, दमन और एक नागरिक के रूप में उनक अधिकारों का शोषण और उनके हकों से वंचित किया जाता है।
2. **यह असमानता बढ़ाता हैः** सामाजिक बहिष्करण नुकसान और संसाधनों (जैसे आमदनी या संपत्ति) में विषमताएं बढ़ाता है। यह पहचान आधारित भेदभाव ('तुम कौन हो') पर जोर देती है और उसे बढावा देती है तथा उन्हें ज़्यादा कमजोर व सत्ताहीन छोड़ देती है(जैसे पहचान आधारित भेदभाव जाति, नस्लता और धर्म अथवा जेंडर, विक्लांगता, एच.आई.वी.–प्रभावित अथवा व्यक्ति के किसी वैकल्पिक यौनिकता से संबद्ध होने के कारण)
3. यह किसी व्यक्ति या समुदाय के मूलभूत मानवाधिकारों का उल्लंघन करता है।

सामाजिक बहिष्करण की प्रक्रिया समाज में कैसे काम करती है?

सामाजिक बहिष्करण सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक ढांचों और संस्थानों में रची–बसी होती है। यह एक गहन रूप से असमान समाज का अभिव्यक्त रूप होता है। सामाजिक बहिष्करण की प्रक्रिया समाज में असमनाता और भेदभाव के संस्थागत रूपों के माध्यम से कार्य करती है।

बहिष्करण की प्रक्रिया नीति अथवा भेदभावपूर्ण कार्रवाई का प्रत्यक्ष अथवा सुनि"चत परिणाम हो सकता है, उदाहरण के लिए प्रवासी समूहों के राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक अधिकार का दमन अथवा जेंडर, जाति अथवा आयु के आधार पर जानबूझकर किया जाने वाला भेदभाव। यह प्रक्रिया घर, गांव, शहर, राष्ट्र अथवा वै"वक आदि विभिन्न स्तरों पर काम कर सकती है।

भेदभाव, लांछन अथवा मानवाधिकारः सामाजिक बहिष्करण की प्रक्रिया आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक ढांचों तथा संबंधों में रची–बसी होती है। ये प्रक्रियाएं समाज की सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक प्रक्रियाओं के माध्यम से पुनर्स्थापित की जाती है। ताकतवर और प्रभाव"ाली समूहों को प्रभाव"ाली सामाजिक समूहों के माध्यम से वि"ाष्ट पहचानें हासिल करते हैं जो गरीब के बारे में एक नकारात्मक रूढ़िगत छवि रखते हैं। यह कम ताकतवर समुदायों की संस्कृतियों और आवाज़ों का औपचारिक तौर पर महत्वहीनता और नज़रंदाज़ करने की प्रक्रिया है।

बहिष्करण से होने वाले नुकसान निम्न के माध्यम से काम कर सकते हैंः

- बहुत ज़्यादा शोषण, ताकि सामाजिक रूप से बहिष्कृत समूहों को सबसे खराब कार्य स्थितियों में न्यूनतम आमदनी वाले रोजगारों तथा सबसे असुरक्षित और अनौपचारिक क्षेत्र में काम करने पर मजबूर किया जा सके।
- सत्तापूर्ण अथवा संसाधनपूर्ण और समाज में हाशियाबद्ध महसूस करने वाले लोगों के बोच संबंधों का अनियमित रूप
- जैसे कि बहिष्कृत समूहों द्वारा आजीविका के सम्मानित रूपों तक पहुंचने में बाधाओं का सामना करने के कारण उनके द्वारा व्यवसायों में लांछित अथवा कम सम्मानित गतिविधियों की संभावना। (उदाहरण के लिए मानविक रूप से मैला ढोने वाले और सफाई कर्मचारी आदि)
- भारत में, गरीबी और संपत्तिहीनता के साथ, वंचितों को समाज में उनकी अस्थाई स्थिति के रहते (मानसिक रूप से बीमार, कोढ़ी अथवा एड्स–प्रभावित, विविध प्रकार के नशेड़ी, अनाथ और उत्पीड़ित बच्चे, परित्यक्त बच्चे और विक्लांग), 'कलंकित' पहचाना से जोड़ दिया गया था (कई बेघर थे और सड़कों पर रहे थे।) तथा उनकी आजीविका के अर्थहीन प्रकृति के रहते जिसमें वे या तो दूसरों के द्वारा बहुत ज़्यादा शोषण (बंधुआ मज़दूरी) के शिकार होते हैं या फिर अत्यंत खराब आत्म–शोषण (शरीर बेचना, जैसे कि यौन कर्म अथवा शरीर के अंग बेचना) अथवा दान के अनिश्चत रूपों (भीख मांगना सामान्यतः अभाव के साथ जुड़ा होता है) पर निर्भर रहते हैं।

सामाजिक बहिश्करण गरीबी और स्वास्थ्य से कैसे जुड़ा होता है?

सामाजिक बहिष्करण बहु–आयामी होता है और इसकी जड़ें सामाजिक और ढांचागत असानता में बसी हैं। सामाजिक बहिष्करण के जुड़ाव और स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव को समझने के लिए, हमें स्वास्थ्य के सामाजिक भेदभावों के साथ जोड़कर देने की आवश्यकता है।

श्रम बाज़ार, शैक्षिक व्यवस्था, धर्म और अन्य सांस्कृतिक वयवस्थाओं तथा राजनैतिक संस्थाओं सहित सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक संदर्भ, आर्थिक स्तर, सत्ता और प्रतिष्ठा तक अलग–अलग पहुंच पर आधारित सामाजिक विभाजन के चलन को बढ़ाते हैं। आय–स्तर, शिक्षा, व्यवसायिक स्तर, जेंडर, जाति/नस्लता और अन्य कारकों का उपयोगइन विभेदकारी सामाजिक स्थितियों के प्रधान संकेतकों के रूप में किया जाता है।

व्यक्तियों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति और समूहों के अनुभवों के आधार पर स्वास्थ्य से जुड़ी स्थितियों के संपर्क और कमजोर स्थितियों में भिन्नताएं। सामाजिक–आर्थिक स्थिति संपर्कता के स्तर अथवा निरंतरता अथवा कमजोरियों के स्तर को सुनिश्चित करती है।

स्वास्थ्य असमानताओं तथा सामाजिक असमानता पर ध्यान देते हुए, विचार केंद्र गरीब वर्गों और सामाजिक रूप से बहिष्कृतों पर होना चाहिए जो बीमारियों के खतरों से घिरे होने के साथ–साथ स्वास्थ्य सेवाओं से बहिष्कृत किए जाने की संभावनाओं से भी घिरे होते हैं। गरीबों के साथ–साथ सामाजिक रूप से वंचितों के उच्च अनुपात, स्वास्थ्य समस्याओं की भयावहता तथा समाज की महामारी रूपरेखा को देखते हुए अनिवार्य है। यद्यपि, सामाजिक निर्धारकों के ढांचे को देखते हुए, खराब–स्वास्थ्य की कमजोरियों को भी समझना होगा जो विभिन्न सामाजिक–आर्थिक वर्गों में दिखाई देती हैं।

सामजिक बहिष्करण की अवधारणा असमानताओं और गरीबी को समझने में सहायक होती है। सामाजिक बहिष्करण का चक्र और गरीबी आपस में जुड़े होते हैं। गरीबी के कारण लोग अलग–अलग प्रकार के भेदभाव और सामजिक बहिष्करण का सामना करते हैं और दूसरी ओर सामाजिक बहिष्करण के व्यवस्थित

रूपों के कारण गरीबी जन्म लेती है। उदाहरण के लिए, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्गों की गरीबी दरें अन्य प्रभुत्व"ाली जातियों अथवा उच्च वर्गों की जनसंख्या के मुकाबले अलग होती हैं। सामाजिक रूप से बहिष्कृत समुदायों तथा अन्यों के स्वास्थ्य स्तर में भिन्नताएं बहुत सामान्य हैं। यह भिन्नता ि"ाक्षा, भ्रष्टाचार, जगह, संसाधनों आदि का उपयोग करने के लिए कारगर साबित हो सकते हैं।

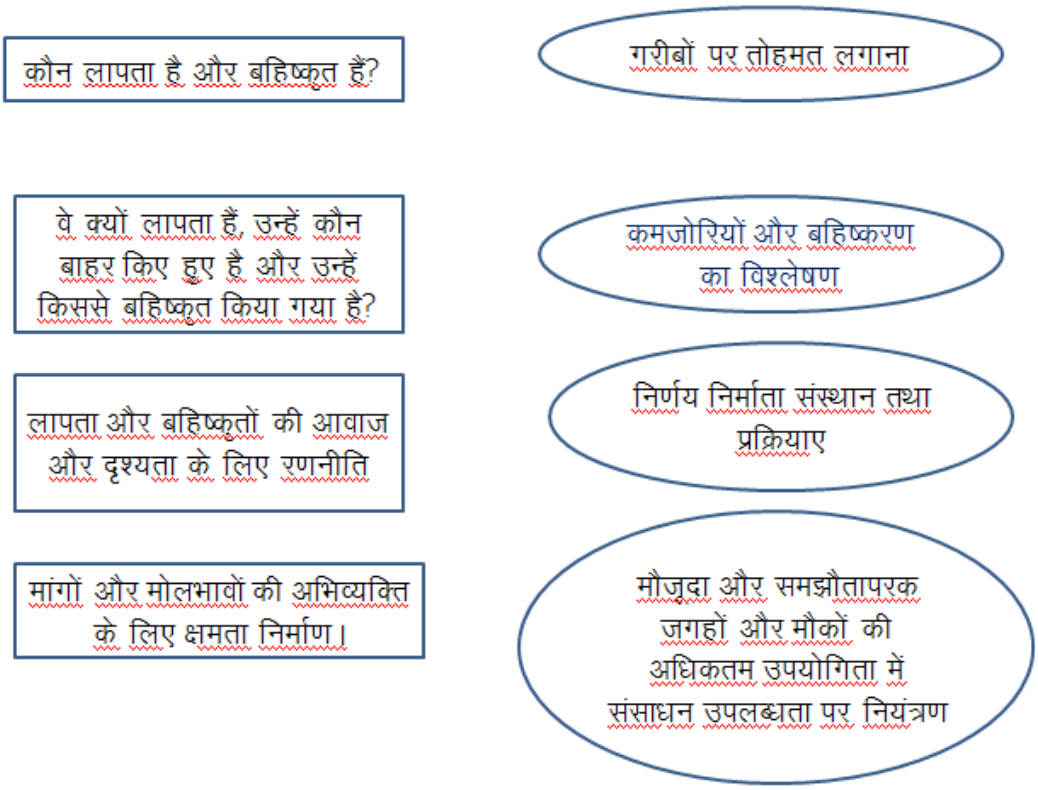

सामाजिक बहिष्करण के लिए हम कैसे प्रतिक्रिया कर सकते हैं?

- सामाजिक रूप से बहिष्कृत समूहों और समुदायों की आवाज़ को उनके अधिकारों और हकदारियों के बारे में जागरूक तथा उन्हें जानकारियों एवं ि"ाक्षा द्वारा स"ाक्त बनाते हुए नीति एवं राजनैतिक प्रक्रिया में मजबूत बनाना।
- यह सुनि"चत करने के लिए कानूनी ढांचा कि समाज में जाति, वर्ग, नस्ल, जेंडर अथवा धर्म के आधार पर भेदभाव अस्वीकार्य है और इससे बहिष्कृत समूहों के अधिकारों का आ"वासन भी दिया जा सकता है।
- बहिष्कृत समूहों के शोषण को संबोधित करने के लिए सामाजिक संरक्षण नीतियां, उदाहरण के लिए, बड़े पैमाने पर शोषणकारी अनौपचारिक क्षेत्र में काम करने वालों को कुछ आधारभूत प्रकार की सुरक्षा प्रदान करना।

- ि"ाक्षा प्रणाली, मीडिया, जन आंदोलनों, बहिष्कृत समूहों के नागरिक और राजनैतिक अधिकार मजबूत बनाए जा सकते हैं।
- सामाजिक रूप से बहिष्कृत समूहों को एकजुट करने हेतु नागरिक समाज नेटवर्क को बढ़ावा देना और अन्य संगठनों के साथ गठबंधन तैयार करने से वास्तव में बहिष्कृत समूहों को अपने अधिकारों और न्याय के लिए आवाज़ उठाने में मदद मिलेगी, इससे वे अपने समाज में निर्णय प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने हेतु सक्षम होंगे।